Imame Husain ki Karamat (Hindi)

इमामे हुसैन की करामात

रिसाला नं.: 52

शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी
हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी

इस रिसाले में मुला-हज़ा कीजिये

- कूंएं का पानी उबल पड़ा 7
- नूर का सुतून और सफ़ेद परिन्दे 13
- अज़िय्यत नाक कीड़ों का तआ़रुफ़ 32
- मग़फ़िरत से मायूसी की लर्ज़ाख़ेज़ हिकायत 36
- यज़ीद की इब्रतनाक मौत 45
- इब्ने ज़ियाद की नाक में सांप 48
- आ़शूरा के फ़ज़ाइल 57

पेशकश : मजलिसे मक-त-बतुल मदीना

मक-त-बतुल मदीना
सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले जे़ल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المُستطرف ج١ ص٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

इमामे हुसैन की करामात

येह रिसाला **(इमामे हुसैन की करामात)**

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

''या रब्बे हुसैन ! मुझे इश्क़े हुसैन दे'' के इक्कीस हुरूफ़ की निस्बत से इस रिसाले को पढ़ने की 21 निय्यतें

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : **''मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है ।''**

(طَبَرانی مُعجَم کبیر ج٦ ص١٨٥ حدیث٥٩٤٢)

दो[2] म-दनी फूल : (1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता (2) जितनी अच्छी **निय्यतें** ज़ियादा उतना सवाब भी ज़ियादा ।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़ह़ा के ऊपर दी हुई दो[2] अ़-रबी इ़बारात पढ़ लेने से चारों[4] निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इस रिसाले का अव्वल ता आख़िर मुत़ा-लआ़ करूंगा ﴾6﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और ﴾7﴿ क़िब्ला रू मुत़ा-लआ़ करूंगा ﴾8﴿ क़ुरआनी आयात और ﴾9﴿ अह़ादीसे मुबा-रका की ज़ियारत करूंगा ﴾10﴿ जहां जहां ''अल्लाह'' का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾11﴿ जहां जहां ''सरकार'' का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा ﴾12﴿ इस रिवायत ''عِنْدَ ذِكْرِ الصّٰلِحِيْنَ تَنَزَّلُ الرَّحْمَةُ'' या'नी नेक लोगों के ज़िक्र के

वक़्त रह़मत नाज़िल होती है।" (حِلیۃالاولیاء ج۷ص ۳۳۵حدیث ۱۰۷۵۰) पर अ़मल करते हुए इस रिसाले में दिये गए इमामे आ़ली मक़ाम और बुज़ुर्गाने दीन عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के वाक़िआ़त दूसरों को सुना कर ज़िक्रे सालिह़ीन की ब-र-कतें लूटूंगा ﴿13﴾ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत ख़ास ख़ास मक़ामात पर अन्डर लाइन करूंगा ﴿14﴾ दूसरों को येह रिसाला पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा ﴿15﴾ इस ह़दीसे पाक "تَهَادَوْا تَحَابُّوْا या'नी एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में **महब्बत** बढ़ेगी।" (مؤطا امام مالك، ج۲،ص۴۰۷ حدیث ۱۷۳۱) पर अ़मल की निय्यत से (10 मुह़र्रमुल ह़राम की निस्बत से कम अज़ कम 10 अ़दद या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह रिसाला ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा ﴿16﴾ इस रिसाले के मुत़ा-लए़ का सवाब सारी उम्मत को ईसाल करूंगा ﴿17﴾ रिसाले वग़ैरा में शर-ई ग़-लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा (नाशिरीन वग़ैरा को सिर्फ़ ज़बानी अ़ग़लात़ बता देना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता) ﴿18﴾ मौक़अ़ की मुना-सबत से इस रिसाले से दर्स दूंगा ﴿19﴾ हर साल मुह़र्रमुल ह़राम में येह रिसाला पढ़ लिया करूंगा ﴿20﴾ जो बात समझ में नहीं आएगी उस के लिये आयते करीमा "فَسْـَٔلُوْۤا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۴۳﴾" **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तो ऐ लोगो इ़ल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इ़ल्म नहीं।" (پ۱٤ النحل، ٤٣) पर अ़मल करते हुए उ़-लमा से रुजूअ़ करूंगा ﴿21﴾ जो बात समझने में दुश्वारी होगी उस को बार बार पढ़ूंगा।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की करामात

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए मगर आप सवाब की निय्यत से येह रिसाला (63 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप का सीना ह़ुब्बे अहले बैत का मदीना बन जाएगा ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

बेचैन दिलों के चैन, रह़मते दारैन, ताजदारे ह़-रमैन, सरवरे कौनैन, नानाए ह़-सनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : जब जुमा'रात का दिन आता है अल्लाह तआ़ला फ़िरिश्तों को भेजता है जिन के पास चांदी के काग़ज़ और सोने के क़लम होते हैं वोह लिखते हैं, कौन **यौमे जुमा'रात** और **शबे जुमुआ़** मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ता है ।

(کنزالعمال ج۱،ص ۲۵۰ حدیث ۲۱۷٤)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह़ और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

विलादते बा करामत

राकिबे दोशे मुस्त़फ़ा (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم), जिगर गोशए मुर्तज़ा, दिलबन्दे फ़ातिमा, सुल्त़ाने करबला, सय्यिदुश्शु-हदा, इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे अ़र्श मक़ाम, इमामे हुमाम, इमामे तिश्ना काम, ह़ज़रते सय्यिदुना **इमामे हुसैन** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ सरापा करामत थे ह़त्ता कि आप की **विलादते बा सआ़दत भी बा करामत** है। ह़ज़रते सय्यिदी आ़रिफ़ बिल्लाह नूरुद्दीन अ़ब्दुर्रह़मान जामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی **शवाहिदुन्नुबुव्वत** में फ़रमाते हैं, सय्यिदुना **इमामे हुसैन** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की विलादते बा सआ़दत चार[4] **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 4 सि.हि.** को **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में मंगल के दिन हुई। मन्क़ूल है कि इमामे पाक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की मुद्दते ह़म्ल छ[6] माह है। **ह़ज़रते सय्यिदुना यह़या** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **और इमामे आ़ली मक़ाम इमामे हुसैन** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ **के इलावा कोई ऐसा बच्चा ज़िन्दा न रहा जिस की मुद्दते ह़म्ल छ[6] माह हुई हो।**

وَاللّٰهُ تعالٰی اعلَمُ ورسولُهٗ اَعلَم عَزَّوَجَلَّ وَصلَّى اللّٰه تعالٰی علیه واٰلهٖ وسلَّم۔

(شَواهِدُ النُّبُوَّة ص۲۲۸ مكتبة الحقيقة تركى)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا
सय्यिदह फ़ातिमा के लख़्ते जिगर आए हैं
صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم
मरहबा सरवरे आ़लम के पिसर आए हैं

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ
ऐ मुसल्मानो ! मुबारक कि हुसैन आए हैं
वाह क़िस्मत के चराग़े ह़-रमैन आए हैं

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रुख़्सार से अन्वार का इज़्हार

ह़ज़रते अ़ल्लामा जामी قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامِی मजी़द फ़रमाते हैं : ह़ज़रते इमामे आ़ली मक़ाम सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शान येह थी कि **जब अंधेरे में तशरीफ़ फ़रमा होते तो आप** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ **की मुबारक पेशानी और दोनों[2] मुक़द्दस रुख़्सार से अन्वार निकलते और क़ुर्बो जवार ज़ियाबार (या'नी रोशन) हो जाते ।**

(اَیضاً ص۲۲۸)

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का
तू है ऐने नूर तेरा सब घराना नूर का

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा । (كنز العمال)

कुंवें का पानी उबल पड़ा

हज़रते सय्यिदुना इमामे आ़ली मक़ाम इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब **मदीनए मुनव्वरह** से **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا की त़रफ़ रवाना हुए तो रास्ते में ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मुत़ीअ़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَدِيْع से मुलाक़ात हुई । उन्हों ने अ़र्ज़ की, मेरे कुंवें में पानी बहुत ही कम है, बराए करम ! दुआ़ए ब-र-कत से नवाज़ दीजिये । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस कुंवें का पानी त़लब फ़रमाया । जब पानी का डोल ह़ाज़िर किया गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मुंह लगा कर उस में से पानी नोश किया और कुल्ली की । फिर डोल को वापस कुंवें में डाल दिया तो **कुंवें का पानी काफ़ी बढ़ भी गया और पहले से ज़ियादा मीठा और लज़ीज़ भी हो गया ।** (الطبقاتُ الکُبریٰ ج٥، ص ١١٠ دارالکتب العلمیة بیروت)

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم

बाग़ जन्नत के हैं बहरे मद्ह़ ख़्वाने अहले बैत
तुम को मुज़्दा नार का ऐ दुश्मनाने अहले बैत

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है । (ابویعلی)

घोड़े ने बद लगाम को आग में डाल दिया

इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे अ़र्श मक़ाम, इमामे हुमाम, इमामे तिश्ना काम, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ यौमे आ़शूरा या'नी बरोज़ जुमुअ़तुल मुबारक **10 मुह़र्रमुल ह़राम 61** सि.हि. को यज़ीदियों पर इत्मामे हुज्जत करने के लिये जिस वक़्त मैदाने करबला में **ख़ुत़्बा** इर्शाद फ़रमा रहे थे उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के मज़्लूम क़ाफ़िले के ख़ैमों की ह़िफ़ाज़त के लिये ख़न्दक़ में रोशन कर्दा आग की त़रफ़ देख कर एक बद ज़बान यज़ीदी (मालिक बिन उ़र्वह) इस त़रह़ बक्वास करने लगा, **"ऐ हुसैन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ! तुम ने वहां की आग से पहले यहीं आग लगा दी !" ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : **كَذَبْتَ يَا عَدُوَّاللّٰه** या'नी "ऐ दुश्मने ख़ुदा ! तू झूटा है, क्या तुझे येह गुमान है कि **مَعَاذَاللّٰه** عَزَّوَجَلَّ मैं दोज़ख़ में जाऊंगा !" इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के क़ाफ़िले के एक जां निसार जवान ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्लिम बिन औ़सजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़ज़रते इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से उस मुंहफट बद लगाम

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

के मुंह पर तीर मारने की इजाज़त त़लब की। ह़ज़रते इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ ने येह फ़रमा कर इजाज़त देने से इन्कार किया कि हमारी त़रफ़ से ह़म्ले का आग़ाज़ नहीं होना चाहिये। फिर इमामे तिश्ना काम رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ ने दस्ते दुआ़ बुलन्द कर के अ़र्ज़ की : "ऐ रब्बे क़ह्हार ! عَزَّوَجَلَّ इस ना-बकार को अ़ज़ाबे नार से क़ब्ल भी इस दुन्याए ना पाएदार में आग के अ़ज़ाब में मुब्तला फ़रमा।" **फ़ौरन दुआ़ मुस्तजाब (क़बूल) हुई और उस के घोड़े का पाउं ज़मीन के एक सूराख़ पर पड़ा जिस से घोड़े को झटका लगा और बे अदब व गुस्ताख़ यज़ीदी घोड़े से गिरा, उस का पाउं रकाब में उलझा, घोड़ा उसे घसीटता हुवा दौड़ा और आग की ख़न्दक़ में डाल दिया। और बद नसीब आग में जल कर भसम हो गया।** इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ ने सज्दए शुक्र अदा किया, ह़म्दे इलाही बजा लाए और अ़र्ज़ की : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** तेरा शुक्र है कि तूने आले रसूल के गुस्ताख़ को सज़ा दी।" (सवानेहे़ करबला, स. 88)

رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُم

अहले बैते पाक से बे बाकियां गुस्ताख़ियां

لَعْنَةُ اللّٰہِ عَلَیْکُم दुश्मनाने अहले बैत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर सो रह्मतें नाज़िल फ़रमाता है । (طبرانی)

सियाह बिच्छू ने डंक मारा

गुस्ताख़ व बद लगाम यज़ीदी का हाथों हाथ भयानक अन्जाम देख कर भी बजाए इब्रत ह़ासिल करने के इस को एक इत्तिफ़ाक़ी अम्र समझते हुए एक बेबाक यज़ीदी ने बका : आप को **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से क्या निस्बत ? येह सुन कर क़ल्बे इमाम को सख़्त ईज़ा पहुंची और तड़प कर दुआ मांगी : "ऐ रब्बे जब्बार عَزَّ وَجَلَّ इस बद गुफ़्तार को अपने अज़ाब में गिरिफ़्तार फ़रमा ।" दुआ का असर हाथों हाथ ज़ाहिर हुवा, उस बक्वासी को एक दम क़ज़ाए ह़ाजत की ज़रूरत पेश आई, फ़ौरन घोड़े से उतर कर एक त़रफ़ को भागा और बरह्ना हो कर बैठा, **नागाह एक सियाह बिच्छू ने डंक मारा नजासत आलूदा तड़पता फिरता था, निहायत ही ज़िल्लत के साथ अपने लश्करियों के सामने इस बद ज़बान की जान निकली ।** मगर उन संगदिलों और बे शर्मों को इब्रत न हुई इस वाक़िए को भी उन लोगों ने इत्तिफ़ाक़ी अम्र समझ कर नज़र अन्दाज़ कर दिया ।

(ऐज़न, स. 89)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (ترغیب الترہیب)

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا کَرَّمَ اللّٰہُ وَجْہَہُ الْکَرِیْم

अ़ली के प्यारे ख़ातूने क़ियामत के जिगर पारे

ज़मीं से आस्मां तक धूम है इन की सियादत की

गुस्ताख़े हुसैन प्यासा मरा

यज़ीदी फ़ौज का एक सख़्त दिल मुज़्नी शख़्स इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के सामने आ कर यूं बकने लगा : ''देखो तो सही दरियाए फ़ुरात कैसा मौजें मार रहा है, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम्हें इस का एक क़त़रा भी न मिलेगा और तुम यूं ही प्यासे हलाक हो जाओगे।'' इमामे तिश्ना काम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बारगाहे रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की, **اَللّٰھُمَّ اَمِتْہُ عَطْشَانًا۔** या'नी **''या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस को प्यासा मार।'' इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दुआ़ मांगते ही उस बे ह़या मुज़्नी का घोड़ा बिदक कर दौड़ा, मुज़्नी पकड़ने के लिये उस के पीछे भागा, प्यास का ग़-लबा हुवा, **इस शिद्दत की प्यास लगी कि اَلْعَطَشْ! اَلْعَطَشْ! या'नी हाए प्यास ! हाए प्यास ! पुकारता था मगर पानी जब इस के मुंह से लगाते थे तो एक क़त़रा भी पी न सकता था यहां तक कि इसी शिद्दते प्यास में तड़प**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (حاکم)

तड़प कर मर गया। (सवानेहे करबला, स. 90)

كَرَّمَ اللّٰهُ وَجْهَهُ الْكَرِيْم

हां मुझ को रखो याद मैं हैदर का पिसर हूं
और बाग़े नुबुव्वत के शजर का मैं समर हूं
मैं दीदए हिम्मत के लिये नूरे नज़र हूं
प्यासा हूं मगर साक़िये कौसर का पिसर हूं

करामात इत्मामे हुज्जत की कड़ी थी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की शाने आ़ली किस क़दर अ़-ज़मत वाली है। मा'लूम हुवा कि ख़ुदा वन्दे ग़फ़ूर عَزَّوَجَلَّ को इमामे पाक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की बे अ-दबी क़त्अ़न ना मन्ज़ूर है। और आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का बद गो दोनों[2] जहां में मरदूद व मत़रूद[1] है। गुस्ताख़ाने हुसैन को दुन्या में भी दर्दनाक सज़ाओं का सामना हुवा और इस में यक़ीनन बड़ी इ़ब्रत है। सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی बा'ज़ गुस्ताख़ाने हुसैन के हाथों हाथ होने वाले इ़ब्रत नाक बद अन्जाम के वाक़िआ़त नक़्ल करने के बा'द

1 : धुत्कारा हुवा।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (کنزالعمال)

तह़रीर फ़रमाते हैं : फ़रज़न्दे रसूल को येह बात भी दिखा देनी थी कि इस की मक़्बूलिय्यते बारगाहे ह़क़ عَزَّوَجَلَّ पर और इन के क़ुर्बो मन्ज़िलत पर जैसी कि नुसूसे कसीरा व अह़ादीसे शहीरा शाहिद हैं ऐसे ही इन के ख़वारिक़ व करामात भी गवाह हैं। अपने इस फ़ज़्ल का अ़-मली इज़्हार भी इत्मामे ह़ुज्जत के सिल्सिले की एक कड़ी थी कि अगर तुम आंख रखते हो तो देख लो कि जो ऐसा मुस्तजाबुद्दा'वात[1] है उस के मुक़ाबले में आना ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) से जंग करना है। इस का अन्जाम सोच लो और बाज़ रहो मगर शरारत के मुजस्समे इस से भी सबक़ न ले सके और दुन्याए ना पाएदार की ह़िर्स का भूत जो उन के सरों पर सुवार था उस ने इन्हें अन्धा बना दिया।

(सवानेह़े करबला, स. 90)

नूर का सुतून और सफ़ेद परिन्दे

इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत के बा'द आप के **सरे मुनव्वर** से **मु-तअ़द्दद** करामात का

1 : या'नी जिस की दुआ़ क़बूल होती हो।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा। (ابن عدی)

ज़ुहूर हुवा । अहले बैत عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के क़ाफ़िले के बक़िय्या अफ़राद **11 मुहर्रमुल हराम** को कूफ़ा पहुंचे जब कि शु-हदाए करबला عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के मुबारक सर उन से पहले ही वहां पहुंच चुके थे। इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का **सरे अन्वर** रुस्वाए ज़माना यज़ीदी बद बख़्त ''ख़ौली बिन यज़ीद'' के पास था येह मरदूद रात के वक़्त कूफ़ा पहुंचा । क़स्रे इमारत (या'नी गवर्नर हाउस) का दरवाज़ा बन्द हो चुका था। येह **सरे अन्वर** को ले कर अपने घर आ गया । ज़ालिम ने **सरे अन्वर** को बे अ-दबी के साथ ज़मीन पर रख कर एक बड़ा बरतन उस पर उलट कर उस को ढांप दिया और अपनी बीवी ''नवार'' के पास जा कर कहा : मैं तुम्हारे लिये ज़माने भर की दौलत लाया हूं, वोह देख हुसैन बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का सर तेरे घर पर पड़ा है। वोह बिगड़ कर बोली : ''तुझ पर ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की मार ! लोग तो सीमो ज़र लाएं और तू फ़रज़न्दे रसूल का **मुबारक सर** लाया है । ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अब मैं तेरे साथ कभी न रहूंगी ।'' ''नवार'' येह कह कर अपने बिछोने से उठी और जिधर **सरे**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (جامع صغیر)

अन्वर तशरीफ़ फ़रमा था उधर आ कर बैठ गई। उस का बयान है : **ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ **की क़सम ! मैं ने देखा कि एक नूर बराबर आस्मान से उस बरतन तक मिस्ले सुतून चमक रहा था और सफ़ेद परिन्दे उस के इर्द गिर्द मंडला रहे थे।** जब सुब्ह़ हुई तो ख़ौली बिन यज़ीद **सरे अन्वर** को इब्ने ज़ियादे बद निहाद के पास ले गया।

(الکامل فِی التّاریخ ج۳، ص٤٣٤)

बहारों पर हैं आज आराइशें गुलज़ारे जन्नत की
सुवारी आने वाली है शहीदाने मह़ब्बत की

ख़ौली बिन यज़ीद का दर्दनाक अन्जाम

दुन्या की **मह़ब्बत** और मालो ज़र की हवस इन्सान को अन्धा और अन्जाम से बे ख़बर कर देती है। बद बख़्त ख़ौली बिन यज़ीद ने दुन्या ही की **मह़ब्बत** की वजह से मज़्लूमे करबला का **सरे अन्वर** तन से जुदा किया था। मगर चन्द ही बरस के बा'द इस दुन्या ही में उस का ऐसा ख़ौफ़नाक अन्जाम हुवा कि कलेजा कांप जाता है चुनान्चे चन्द ही बरस के बा'द

मुख़्तार स-क़फ़ी ने क़ातिलीने इमामे हुसैन के ख़िलाफ़ जो इन्तिक़ामी कारवाई की इस ज़िम्न में सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : मुख़्तार ने एक हुक्म दिया कि करबला में जो शख़्स (लश्करे यज़ीद के सिपह सालार) अ़म्र बिन सा'द का शरीक था वोह जहां पाया जाए मार डाला जाए। येह हुक्म सुन कर कूफ़ा के जफ़ा शिआ़र सूरमा बसरा भागना शुरूअ़ हुए। मुख़्तार के लश्कर ने उन का तआ़क़ुब किया जिस को जहां पाया ख़त्म कर दिया, लाशें जला डालीं, घर लूट लिये। ''ख़ौली बिन यज़ीद'' वोह ख़बीस है जिस ने ह़ज़रते इमामे आ़ली मक़ाम, सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ का **सरे मुबारक** तने अक़्दस से जुदा किया था। येह रू सियाह भी गिरिफ़्तार कर के मुख़्तार के पास लाया गया, **मुख़्तार ने पहले इस के चारों हाथ पैर कटवाए फिर सूली चढ़ाया, आख़िर आग में झोंक दिया।** इस त़रह़ लश्करे इब्ने सा'द के तमाम अश्रार को त़रह़ त़रह़ के अ़ज़ाबों के साथ हलाक किया। छ हज़ार कूफ़ी जो ह़ज़रते इमामे

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे । (طبرانی)

आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के क़त्ल में शरीक थे उन को मुख़्तार ने त़रह़ त़रह़ के अ़ज़ाबों के साथ हलाक कर दिया ।

(सवानेहे़ करबला, स. 122)

ऐ तिश्नगाने ख़ूने जवानाने अहले बैत — देखा कि तुम को ज़ुल्म की कैसी सज़ा मिली
कुत्तों की त़रह़ लाशे तुम्हारे सड़ा किये — घूरे[1] पे भी न गोर[2] को तुम्हारी जा मिली
रुस्वाए ख़ल्क़ हो गए बरबाद हो गए — मरदूदो ! तुम को ज़िल्लते हर दो सरा मिली
तुम ने उजाड़ा ह़ज़रते ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا *का बोस्तां — तुम ख़ुद उजड़ गए तुम्हें येह बद दुआ़ मिली*
दुन्या परस्तो ! दीन से मुंह मोड़ कर तुम्हें — दुन्या मिली न ऐ़शो त़रब[3] की हवा मिली
आख़िर दिखाया रंग शहीदों के ख़ून ने — सर कट गए अमां न तुम्हें इक ज़रा मिली

पाई है क्या नई़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْکَرِیْم *उन्हों ने अभी सज़ा*
देखेंगे वोह जह़ीम[4] में जिस दिन सज़ा मिली

مدینہ

1 : या'नी कचरा कूंडी 2 : या'नी क़ब्र 3 : या'नी ख़ुशी 4 : दोज़ख़ के एक त़ब्क़े का नाम जह़ीम है ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (مسلم)

नेज़े पर सरे अक़्दस की तिलावत

हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ का बयान है : जब यज़ीदियों ने ह़ज़रते इमामे आ़ली मक़ाम, सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के **सरे अन्वर** को नेज़े पर चढ़ा कर कूफ़ा की गलियों में गश्त किया उस वक़्त मैं अपने मकान के बालाख़ाने पर था। जब **सरे मुबारक** मेरे सामने से गुज़रा तो मैं ने सुना कि **सरे पाक** ने (पारह 15 **सू-रतुल कहफ़** की आयत नम्बर 9) तिलावत फ़रमाई :

اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَ الرَّقِيْمِ كَانُوْا مِنْ اٰيٰتِنَا عَجَبًا ﴿۹﴾ (پ ۱۵، الکھف ۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : क्या तुम्हें मा'लूम हुवा कि पहाड़ की खोह (ग़ार) और जंगल के कनारे वाले हमारी एक अ़जीब निशानी थे।

(شَواھِدُ النُّبُوَّۃ ص ۲۳۱)

इसी त़रह़ एक दूसरे बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया कि

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

जब यज़ीदियों ने **सरे मुबारक** को नेज़े से उतार कर इब्ने ज़ियादे बद निहाद के मह़ल में दाख़िल किया, तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के मुक़द्दस होंट हिल रहे थे और ज़बाने अक़्दस पर पारह 13 **सूरए इब्राहीम** की आयत नम्बर **42** की तिलावत जारी थी :

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ۞ (پ ۱۳ ابراهیم ۴۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और हरगिज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को बे ख़बर न जानना ज़ालिमों के काम से।

(रौ-ज़तुश्शुहदा मुतर्जम, जि. 2, स. 385)

इबादत हो तो ऐसी हो तिलावत हो तो ऐसी हो
सरे शब्बीर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ***तो नेज़े पे भी कुरआं सुनाता है***

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मन्हाल बिन अ़म्र कहते हैं : वल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने ब चश्मे ख़ुद देखा कि जब इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के **सरे अन्वर** को लोग नेज़े पर लिये जाते थे उस वक़्त मैं

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

"दिमिश्क़" में था। **सरे मुबारक** के सामने एक शख़्स **सू-रतुल कह्फ़** पढ़ रहा था जब वोह आयत नम्बर 15 पर पहुंचा :

اَنَّ اَصۡحٰبَ الۡكَهۡفِ وَالرَّقِيۡمِ ۙ كَانُوۡا مِنۡ اٰيٰتِنَا عَجَبًا ﴿۹﴾ (پ۱۵ الکھف ۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : पहाड़ की खोह (ग़ार) और जंगल के कनारे वाले हमारी एक अ़जीब निशानी थे।

उस वक़्त अल्लाह तआ़ला ने क़ुव्वते गोयाई बख़्शी तो **सरे अन्वर** ने ब ज़बाने फ़सीह़ फ़रमाया : اَعۡجَبُ مِنۡ اَصۡحَابِ الۡکَھۡفِ قَتۡلِیۡ وَ حَمۡلِیۡ "अस्ह़ाबे कह्फ़ के वाक़िए से मेरा क़त्ल और मेरे सर को लिये फिरना अ़जीब तर है।"

(شرحُ الصُّدور ص۲۱۲)

सर शहीदाने मह़ब्बत के हैं नेज़ों पर बुलन्द رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ
और ऊंची की ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ ***ने इ़ज़्ज़ो शाने अहले बैत***

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہِ و اٰلہٖ وسلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی अपनी किताब **सवानेहे करबला** में येह हिकायत नक्ल करने के बा'द फ़रमाते हैं : दर ह़क़ीक़त बात येही है क्यूं कि **अस्ह़ाबे कहफ़** पर काफ़िरों ने ज़ुल्म किया था और **ह़ज़रते इमामे आ़ली मक़ाम** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को इन के नानाजान صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत ने मेहमान बना कर बुलाया, फिर बे वफ़ाई से पानी तक बन्द कर दिया ! आल व अस्ह़ाब عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان को ह़ज़रते इमामे पाक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के सामने शहीद किया। फिर ख़ुद ह़ज़रते इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को शहीद किया, अहले बैते किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان को असीर (या'नी क़ैदी) बनाया, **सरे मुबारक** को शह्र शह्र फिराया। **अस्ह़ाबे कहफ़** सालहा साल की त़वील नींद के बा'द बोले येह ज़रूर अ़जीब है मगर **सरे अन्वर** का तने मुबारक से जुदा होने के बा'द कलाम फ़रमाना अ़जीब तर है। (सवानेहे करबला, स. 118)

ख़ून से लिखा हुवा शे'र

यज़ीदे पलीद के नापाक लश्करी शु-हदाए करबला عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان के पाकीज़ा सरों को ले कर जा रहे थे। दरीं

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

अस्ना एक मन्ज़िल पर ठहरे । ह़ज़रते सय्यिदुना शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی लिखते हैं, वोह **नबीज़** या'नी खजूर का शीरा पीने लगे । एक और रिवायत में है, **وَهُمْ يَشْرَبُوْنَ الْخَمْر** या'नी वोह शराब पीने लगे । इतने में एक **लोहे का क़लम** नुमूदार हुवा और उस ने **ख़ून** से येह शे'र लिखा

اَتَرْجُوْ اُمَّةٌ قَتَلَتْ حُسَيْنًا شَفَاعَةَ جَدِّهٖ يَوْمَ الْحِسَابِ

(या'नी क्या हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के क़ातिल येह भी उम्मीद रखते हैं कि रोज़े क़ियामत इन के नानाजान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त पाएंगे ?)

बा'ज़ रिवायात में है कि हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बि'सते शरीफ़ा से तीन सो300 बरस पेशतर येह शे'र एक पथ्थर पर लिखा हुवा मिला ।

(الصواعِقُ الْمُحَرقة ١٩٤)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (کنز العمال)

सरे अन्वर की करामत से राहिब का क़बूले इस्लाम

एक राहिब नसरानी ने दैर (या'नी गिर्जा घर) से सरे अन्वर देखा तो पूछा, बताया, कहा : "तुम बुरे लोग हो, क्या दस हज़ार10000 अशरफ़ियां ले कर इस पर राज़ी हो सकते हो कि एक रात येह सर मेरे पास रहे।" उन लालचियों ने क़बूल कर लिया। राहिब ने **सरे मुबारक** धोया, ख़ुश्बू लगाई, रात भर अपनी रान पर रखे देखता रहा एक नूर बुलन्द होता पाया। राहिब ने वोह रात रो कर काटी, सुब्ह़ इस्लाम लाया और गिर्जा घर, उस का मालो मताअ़ छोड़ कर अपनी ज़िन्दगी अहले बैत عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की ख़िदमत में गुज़ार दी। (اَلصَّواعِقُ الْمُحَرقة ١٩٩)

दौलते दीदार पाई पाक जानें बेच कर
करबला में ख़ूब ही चमकी दुकाने अहले बैत رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दिरहमो दीनार ठीकरियां बन गए

यज़ीदियों ने लश्करे इमामे आ़ली मक़ाम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ और उन के ख़ैमों से जो दिरहमो दीनार लूटे

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है। (ابویعلٰی)

थे और जो राहिब से लिये थे उन को तक़्सीम करने के लिये **जब थेलियों के मुंह खोले तो क्या देखा कि वोह सब दिरहमो दीनार ठीकरियां बने हुए थे** और उन के एक त़रफ़ पारह 13 **सूरए इब्राहीम** की आयत (नम्बर 42)

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا یَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ۬ؕ

(**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और हरगिज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को बे ख़बर न जानना ज़ालिमों के काम से।) और दूसरी त़रफ़ पारह 19 **सू-रतुश्शु-अ़राअ** की आयत (नम्बर 227) तह़रीर थी :

وَسَیَعْلَمُ الَّذِیْنَ ظَلَمُوْۤا اَیَّ مُنْقَلَبٍ یَّنْقَلِبُوْنَ۠ ﴿۲۲۷﴾

(**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और अब जाना चाहते हैं ज़ालिम कि किस करवट पर पलटा खाएंगे।) (ایضاً ص۱۹۹)

तुम ने उजाड़ा ह़ज़रते ज़हरा का बोस्तां
तुम ख़ुद उजड़ गए तुम्हें येह बद दुआ़ मिली
रुस्वाए ख़ल्क़ हो गए बरबाद हो गए
मरदूदो ! तुम को ज़िल्लते हर दो सरा मिली

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह क़ुदरत की त़रफ़ से एक दर्से इ़ब्रत था कि बद बख़्तो ! तुम ने इस फ़ानी दुन्या की ख़ात़िर दीन से मुंह मोड़ा और आले रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर ज़ुल्मो सितम का पहाड़ तोड़ा। याद रखो ! दीन से तुम ने सख़्त ला परवाही बरती और जिस फ़ानी व बे वफ़ा दुन्या के हुसूल के लिये ऐसा किया वोह भी तुम्हारे हाथ नहीं आएगी और तुम خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَة (या'नी दुन्या में भी नुक़्सान और आख़िरत में भी नुक़्सान) का मिस्दाक़ हो गए

दुन्या परस्तो दीन से मुंह मोड़ कर तुम्हें दुन्या मिली न ऐ़शो त़रब की हवा मिली

तारीख़ शाहिद है कि मुसल्मानों ने जब कभी अ़-मलन दीन के मुक़ाबले में इस फ़ानी दुन्या को तरजीह़ दी तो इस बे वफ़ा दुन्या से भी हाथ धो बैठे और जिन्हों ने इस फ़ानी दुन्या को लात मार दी और क़ुरआनो सुन्नत के अह़कामात पर मज़्बूत़ी से क़ाइम रहे और दीनो ईमान से मुंह नहीं मोड़ा बल्कि अपने किरदार व अ़मल से येह साबित किया

सर कटे कुम्बा मरे सब कुछ लुटे दामने अह़मद न हाथों से छुटे صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

तो दुन्या हाथ बांध कर उन के पीछे पीछे हो गई और वोह दारैन में सुर्ख़-रू हुए। मेरे आक़ा आ'ला हज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं

वोह कि इस दर का हुवा ख़ल्क़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ***उस की हुई***

वोह कि इस दर से फिरा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***उस से फिर गया***

सरे अन्वर कहां मदफ़ून हुवा ?

इमामे आ़ली मक़ाम, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के **सरे अन्वर** के मदफ़न के बारे में इख़्तिलाफ़ है। अ़ल्लामा कुरतुबी और ह़ज़रते सय्यिदुना शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि यज़ीद ने असीराने करबला और **सरे अन्वर** को **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا रवाना कर दिया और **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में **सरे अन्वर** को तज्हीज़ो तक्फ़ीन के बा'द जन्नतुल बक़ीअ़ शरीफ़ में ह़ज़रते सय्यि-दतुना फ़ाति़मा ज़हरा, या ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا

के पहलू में दफ़्न कर दिया गया। बा'ज़ कहते हैं कि असीराने करबला ने **चालीस[40] रोज़** के बा'द करबला में आ कर **सरे अन्वर** को ज-सदे मुबारक से मिला कर दफ़्न किया। बा'ज़ का कहना है, यज़ीद ने हुक्म दिया था कि "इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के **सरे अन्वर** को शहरों में फिराओ।" फिराने वाले जब **अ़स्क़लान** पहुंचे तो वहां के अमीर ने उन से ले कर दफ़्न कर दिया। जब अ़स्क़लान पर फ़िरंगियों का ग़-लबा हुवा तो त़लाएअ़ बिन रज़्ज़ीक जिस को सालेह़ कहते हैं ने **तीस हज़ार[30000] दीनार** दे कर फ़िरंगियों से **सरे अन्वर** लेने की इजाज़त ह़ासिल की और बमअ़ फ़ौज व ख़ुद्दाम नंगे पाउं वहां से 8 जुमादिल आख़िर 548 सि.हि. बरोज़ इतवार मिस्र में लाया। **उस वक़्त भी सरे अन्वर का ख़ून ताज़ा था और उस से मुश्क की सी ख़ुश्बू आती थी।** फिर उस ने सब्ज़ ह़रीर (रेशम) की थेली में आबनूसी कुरसी पर रख कर इस के हम वज़्न मुश्क व अ़म्बर और ख़ुश्बू उस के नीचे और इर्द गिर्द रखवा कर उस पर **मश्हदे हुसैनी** बनवाया चुनान्चे

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (حاکم)

क़रीबे ख़ान ख़लीली के **मश्हदे हुसैनी** मश्हूर है ।

(शामे करबला, स. 246)

किस शक़ी की है हुकूमत हाए क्या अन्धेर है
दिन दिहाड़े लुट रहा है कारवाने अहले बैत رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم

तुरबते सरे अन्वर की ज़ियारत

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल फ़त्ताह़ बिन अबी बक्र बिन अह़मद शाफ़ेई ख़ल्वती رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने रिसाले "नूरुल ऐन" में नक़्ल फ़रमाते हैं : शैख़ुल इस्लाम शम्सुद्दीन लक़ानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی जो कि अपने वक़्त के शैख़ुश्शुयूख़े मालिकिय्या थे हमेशा मश्हदे मुबारक में **सरे अन्वर** की ज़ियारत को ह़ाज़िर होते और फ़रमाते कि ह़ज़रते इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का **सरे अन्वर** इसी मक़ाम पर है । ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ शहाबुद्दीन ह़-नफ़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने **मश्हदे हुसैनी** की ज़ियारत की मगर मुझे शुबा हो रहा था कि **सरे मुबारक** इस मक़ाम पर है या नहीं ? अचानक मुझ को नींद आ गई, मैं ने ख़्वाब में देखा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (کنزالعمال)

कि एक शख़्स ब सूरते नक़ीब **सरे मुबारक** के पास से निकला और हुज़ूरे पुरनूर, **शाफ़ेए यौमुन्नुशूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के हुज़्रए मुबा-रका में हाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की, "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! अह़मद बिन ह़लबी और अ़ब्दुल वह्हाब ने आप के शहज़ादे इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के **सरे मुबारक के मदफ़न** की ज़ियारत की है।" आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اَللّٰھُمَّ تَقَبَّلْ مِنْھُمَا وَ اغْفِرْلَھُمَا۔ ऐ अल्लाह इन दोनों[2] की ज़ियारत को क़बूल फ़रमा और दोनों[2] को बख़्श दे। ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ शहाबुद्दीन ह़-नफ़ी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि उस दिन से मुझे यक़ीन हो गया कि ह़ज़रते इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का **सरे अन्वर** यहीं तशरीफ़ फ़रमा है फिर मैं ने मरने तक **सरे मुकर्रम** की ज़ियारत नहीं छोड़ी।

(शामे करबला, स. 247)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा। (ابن عدی)

عَزَّ وَجَلَّ
उन की पाकी का ख़ुदाए पाक करता है बयां
رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم
आयए तत़्हीर से ज़ाहिर है शाने अहले बैत

सरे अन्वर से सलाम का जवाब

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ ख़लील अबिल ह़सन तमारसी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **सरे अन्वर** की ज़ियारत के लिये जब **मश्हदे मुबारक** के पास ह़ाज़िर होते तो अ़र्ज़ करते **اَلسَّلَامُ عَلَیْکُم یَا اِبْنَ رَسُوْلِ اللّٰہ** और फ़ौरन जवाब सुनते **:** **وَعَلَیْکَ السَّلَامُ یَا اَبَاالْحَسَن ـ** एक दिन सलाम का जवाब न पाया, ह़ैरान हुए और ज़ियारत कर के वापस आ गए दूसरे रोज़ फिर ह़ाज़िर हो कर सलाम किया तो जवाब पाया। अ़र्ज़ की, या सय्यिदी ! कल जवाब से मुशर्रफ़ न हुवा क्या वजह थी ? फ़रमाया **:** ऐ अबुल ह़सन ! कल उस वक़्त मैं अपने नानाजान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर था और बातों में मश्ग़ूल था।

(शामे करबला, स. 247)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (جامع صغير)

जुदा होती हैं जानें जिस्म से जानां से मिलते हैं

हुई है करबला में गर्म मजलिस वस्लो फ़ुरक़त की

हज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِى फ़रमाते हैं : अहले कश्फ़ सूफ़िया इसी के क़ाइल हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का **सरे अन्वर** इसी मक़ाम पर है। शैख़ करीमुद्दीन ख़ल्वती رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की इजाज़त से इस मक़ाम की ज़ियारत की है।

(ऐज़न, स. 248)

इसी मन्ज़र पे हर जानिब से लाखों की निगाहें हैं

इसी आ़लम को आंखें तक रही हैं सारी ख़ल्क़त की

सरे अन्वर की अ़जीब ब-र-कत

मन्क़ूल है, मिस्र के सुल्तान "मलिक नासिर" को एक शख़्स के **मु-तअ़ल्लिक़** इत्तिलाअ़ दी गई कि येह शख़्स

जानता है कि इस महल में ख़ज़ाना कहां दफ़्न है मगर बताता नहीं। सुल्त़ान ने उगलवाने के लिये उस की ता'ज़ीब या'नी अज़िय्यत देने का हुक्म दिया। मु-तवल्लिये ता'ज़ीब (या'नी अज़िय्यत देने पर मामूर शख़्स) ने उस को पकड़ा और उस के सर पर **ख़नाफ़िस** (गुबरीले) लगाए और उस पर **क़िरमिज़** (या'नी एक त़रह़ के रेशम के कीड़े) डाल कर कपड़ा बांध दिया। येह वोह ख़ौफ़नाक अज़िय्यत व उ़क़ूबत है कि इस को एक मिनट भी इन्सान बरदाश्त नहीं कर सकता। उस का दिमाग़ फटने लगता है और वोह फ़ौरन राज़ उगल देता है। अगर न बताए तो कुछ ही देर के बा'द तड़प तड़प कर मर जाता है। येह सज़ा उस शख़्स को कई मर्तबा दी गई मगर उस को कुछ भी असर न हुवा बल्कि हर मर्तबा ख़नाफ़िस मर जाते थे। लोगों ने इस का सबब पूछा तो उस शख़्स ने बताया कि **जब ह़ज़रते इमामे आ़ली मक़ाम, सय्यिदुना इमामे हुसैन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ **का सरे मुबारक यहां मिस्र में तशरीफ़ लाया था।** اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **मैं ने उस को अ़क़ीदत से अपने**

सर पर उठाया था येह उसी की ब-र-कत और करामत है।

(शामे करबला, स. 248)

फूल ज़ख़्मों के खिलाए हैं हवाए दोस्त ने
ख़ून से सींचा गया है गुल सिताने अहले बैत
رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अज़िय्यत नाक कीड़ों का तआ़रुफ़

मा'लूम हुवा मु-तबर्रिक चीज़ को अ़क़ीदत से सर पर रखना दोनों[2] जहानों में बाइ़से सआ़दत है। इस ह़िकायत में राज़ उगलवाने के लिये इस्ति'माल किये जाने वाले जिन कीड़ों का तज़्किरा है उन के बारे में अ़र्ज़ है : **ख़नाफ़िस ख़ुन्फ़सा** की जम्अ़ है जो कि नजासत और गोबर में पैदा होने वाला सियाह रंग का दो[2] सींग वाला एक कीड़ा है। उर्दू में इस को **गुबरीला** कहते हैं। **क़िरमिज़** छोटे चने के बराबर सुर्ख़ रंग के रेशम जैसे कीड़े को कहते हैं जो कि उ़मूमन बरसात के दिनों में बा'ज़ जंगलों में पैदा होता है। इस को सुखा कर इस से रेशम

रंगने का सुर्ख़ रंग बनाया जाता है। इस की दवा भी बनती है और इस से तेल भी निकालते हैं। उर्दू में इस को **बीर बहूटी** कहते हैं। उस ज़माने में मुल्ज़मों से ए'तिराफ़े जुर्म करवाने के लिये इस त़रीक़े पर ईज़ा देते थे, सर पर नीचे वोह **ख़नाफ़िस** (गुबरीले) और ऊपर **क़िरमिज़** डाल कर बांध देते थे, कीड़े काट काट कर सर की खाल में सूराख़ कर देते थे, उन सूराख़ों में **क़िरमिज़** के टुकड़े और उन की रत़ूबत वग़ैरा दाख़िल हो जाती जिस से दिमाग़ की रगें फट जाती थीं। येह ऐसी ना क़ाबिले बरदाश्त सज़ा होती कि मुल्ज़म फ़ौरन ए'तिराफ़े जुर्म कर लेता था। इस रूंगटे खड़े कर देने वाली दुन्यवी अज़िय्यत के तज़्किरे में अ़ज़ाबे आख़िरत की याद है। आह! इन कीड़ों की तक्लीफ़ जब कि हम में से एक सेकन्ड के लिये कोई बरदाश्त नहीं कर सकता तो क़ब्र व जहन्नम में सांप का डसना और बिच्छूओं के डंक भला कौन सह सकता है! ख़ुदा न ख़्वास्ता किसी एक छोटे से गुनाह पर ही अगर पकड़ हो गई और बिलफ़र्ज़ सिर्फ़ एक ही बिच्छू सर पर बिठा दिया गया तो हमारा क्या बनेगा!

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

डंक मच्छर का भी मुझ से तो सहा जाता नहीं
क़ब्र में बिच्छू के डंक कैसे सहूंगा या रब
عَزَّوَجَلَّ
अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा
येह करम होगा तो जन्नत में रहूंगा या रब
عَزَّوَجَلَّ

सरे मुबारक की चमक दमक

एक रिवायत येह भी है कि **सरे अन्वर** यज़ीदे पलीद के ख़ज़ाने ही में रहा। जब बनू उमय्या के बादशाह सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक का दौरे हुकूमत (96 हि. ता 99 हि.) आया और उन को मा'लूम हुवा तो उन्हों ने **सरे अन्वर** की ज़ियारत की सआ़दत ह़ासिल की, उस वक़्त **सरे अन्वर** की मुबारक हड्डियां सफ़ेद चांदी की त़रह़ चमक रही थीं, उन्हों ने ख़ुश्बू लगाई और कफ़न दे कर मुसल्मानों के क़ब्रिस्तान में दफ़्न करवा दिया।

(تَهذيبُ التَّهذيب ج٢، ص٣٢٦ دارالفكر بيروت)

चेहरे में आफ़्ताबे नुबुव्वत का नूर था
كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم
आंखों में शाने सौलते[1] सरकारे बू तुराब

1 : दब-दबा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह्क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (ابن سنی)

रिज़ाए मुस्तफ़ा का राज़

हज़रते अ़ल्लामा **इब्ने हजर हैतमी मक्की** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى रिवायत फ़रमाते हैं कि सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से ख़्वाब में मुशर्रफ़ हुए देखा कि शहन्शाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उन के साथ मुला–तफ़त (या'नी लुत्फ़ो करम) फ़रमा रहे हैं । सुब्ह उन्हों ने हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से इस ख़्वाब की ता'बीर पूछी, उन्हों ने फ़रमाया : शायद तू ने आले रसूल के साथ कोई भलाई की है। अ़र्ज़ की, जी हां ! मैं ने हज़रते सय्यिदुना इमामे आ़ली मक़ाम इमामे हुसैन رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ के **मुबारक सर** को ख़ज़ानए यज़ीद में पाया तो उस को पांच कपड़ों का कफ़न दे कर अपने रु–फ़क़ा के साथ उस पर नमाज़ पढ़ कर उस को दफ़्न किया है। हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : आप का येही अ़मल रिज़ाए महबूबे रब्बे लम यज़ल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का सबब हुवा है। (اَلصَّواعِقُ الْمُحرِقة ص١٩٩)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह़ और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم
मुस्त़फ़ा इज़्ज़त बढ़ाने के लिये ता'ज़ीम दें
عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان
है बुलन्द इक़्बाल तेरा दूद-माने[1] अहले बैत

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुख़्तलिफ़ मशाहद की वज़ाह़त

ख़त़ीबे पाकिस्तान वाइज़े शीरीं बयान ह़ज़रते मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद शफ़ीअ़ ओकाड़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى अपनी तालीफ़ "शामे करबला" में तह़रीर फ़रमाते हैं **: सरे अन्वर** के **मु-तअ़ल्लिक़** मुख़्तलिफ़ रिवायात हैं और मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर मशाहद[2] बने हुए हैं तो येह भी हो सकता है कि इन रिवायात और मशाहद का तअ़ल्लुक़ चन्द सरों से हो क्यूं कि यज़ीद के पास तमाम शु-हदाए अहले बैत عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के सर भेजे गए थे। तो कोई सर कहीं और कोई कहीं दफ़्न हुवा हो। और निस्बत ह़ुस्ने अ़क़ीदत की बिना पर या किसी और वजह से सिर्फ़

मदीना

1 : दूद-मान या'नी ख़ानदान, बड़ा क़बीला।
2 : मश्हद की जम्अ़ मशाहद है। मश्हद के एक मा'ना येह भी हैं : ह़ाज़िर होने की जगह।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

हज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की तरफ़ कर दी गई हो ।

(शामे करबला, स. 249) وَاللّٰہُ اَعْلَمُ بِحَقِیْقَۃِ الْحَال۔

मग़्फ़िरत से मायूसी की लरज़ा ख़ैज़ ह़िकायत

हज़रते सय्यिदुना अबू मुहम्मद सुलैमान अल आ'मश कूफ़ी ताबेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं **:** मैं हज्जे बैतुल्लाह के लिये हाज़िर हुवा, दौराने त़वाफ़ एक शख़्स को देखा कि ग़िलाफ़े का'बा के साथ चिमटा हुवा कह रहा था **:** "**या अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ **मुझे बख़्श दे और मैं गुमान करता हूं कि तू मुझे नहीं बख़्शेगा ।**" मैं उस की इस अ़जीब सी दुआ़ पर बहुत **मु-तअ़ज्जिब** हुवा कि سُبْحٰنَ اللّٰہِ الْعَظِیم आख़िर इस का ऐसा कौन सा गुनाह है जिस की बख़्शिश की इस को उम्मीद नहीं, मगर मैं त़वाफ़ में मसरूफ़ रहा । दूसरे फैरे में भी सुना तो वोह येही कह रहा था, मेरी हैरानी में मज़ीद इज़ाफ़ा हुवा । मैं ने त़वाफ़ से फ़ारिग़ हो कर उस से कहा, तू ऐसे अ़ज़ीम मक़ाम पर है जहां बड़े से बड़ा गुनाह भी बख़्शा जाता है तो अगर तू

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मग़्फ़िरत और रह़मत त़लब करता है तो उस से उम्मीद भी रख क्यूं कि वोह बड़ा रह़ीमो करीम جَلَّ جَلَالُهٗ है। उस शख़्स ने कहा : ऐ **अल्लाह** के बन्दे तू कौन है ? मैं ने कहा, मैं सुलैमान अल आ'मश (رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) हूं ! उस ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे एक त़रफ़ ले गया और कहने लगा, **मेरा गुनाह बहुत बड़ा है।** मैं ने कहा, क्या तेरा गुनाह पहाड़ों, आस्मानों, ज़मीनों और अ़र्श से भी बड़ा है ? कहने लगा, हां मेरा गुनाह बहुत ज़ियादा बड़ा है ! **अफ़्सोस !** ऐ सुलैमान ! मैं उन सत्तर[70] बद नसीब आदमिय्यों में से हूं जो ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ़ली मक़ाम इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के **सरे अन्वर** को यज़ीदे पलीद के पास लाए थे। यज़ीदे पलीद ने उस **मुबारक सर** को शह्र के बाहर लटकाने का हुक्म दिया। फिर उस के हुक्म से उतारा गया और सोने के त़श्त में रख कर उस के सोने के कमरे (BEDROOM) में रखा गया। आधी रात के वक़्त यज़ीदे पलीद की ज़ौजा की आंख खुली तो उस ने देखा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है। (ابویعلی)

कि **इमामे आ़ली मक़ाम** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के **सरे अन्वर से ले कर आस्मान तक एक नूरानी शुआ़अ़ जग-मगा रही है !** येह देख कर वोह सख़्त ख़ौफ़ज़दा हुई और उस ने यज़ीदे पलीद को जगाया और कहा, उठ कर देखो, मैं एक अ़जीबो ग़रीब मन्ज़र देख रही हूं, यज़ीद ने भी उस रोशनी को देखा और ख़ामोश रहने के लिये कहा। जब सुब्ह़ हुई तो उस ने **सरे मुबारक** निकलवा कर दीबाए सब्ज़ (एक उ़म्दा क़िस्म के सब्ज़ कपड़े) के ख़ैमे में रखवा दिया और उस की निगरानी के लिये सत्तर70 आदमी मुक़र्रर कर दिये, मैं भी उन में शामिल था। फिर हमें हुक्म हुवा जाओ खाना खा आओ। जब सूरज ग़ुरूब हो गया और काफ़ी रात गुज़र गई तो हम सो गए। यकायक मेरी आंख खुल गई, क्या देखता हूं कि आस्मान पर एक बड़ा बादल छाया हुवा है और उस में से गड़-गड़ाहट और परों की फड़-फड़ाहट की सी आवाज़ आ रही है फिर वोह बादल क़रीब होता गया यहां तक कि ज़मीन से मिल गया और उस में से एक मर्द नुमूदार हुवा जिस पर जन्नत के दो2 हुल्ले थे और उस के हाथ में एक फ़र्श

और कुरसियां थीं, उस ने वोह फ़र्श बिछाया और उस पर कुरसियां रख दीं और पुकारने लगा : **ऐ अबुल बशर ! ऐ आदम** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **! तशरीफ़ लाइये।** एक निहायत ह़सीनो जमील बुज़ुर्ग तशरीफ़ लाए और **सरे मुबारक** के पास खड़े हो कर फ़रमाया : "सलाम हो तुझ पर ऐ अल्लाह के वली ! सलाम हो तुझ पर ऐ बक़िय्यतुस्सालिह़ीन ! ज़िन्दा रहे तुम सईद हो कर, क़त्ल हुए तुम त़रीद या'नी ख़लफ़ हो कर, प्यासे रहे ह़त्ता कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें हम से मिला दिया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म फ़रमाए और तुम्हारे क़ातिल के लिये बख़्शिश नहीं, तुम्हारे क़ातिल के लिये कल क़ियामत के दिन दोज़ख़ का बहुत बुरा ठिकाना है।"

येह फ़रमा कर वोह वहां से हटे और उन कुरसियों में से एक कुरसी पर तशरीफ़ फ़रमा हो गए। फिर थोड़ी देर के बा'द एक और बादल आया वोह भी इसी त़रह़ ज़मीन से मिल गया और मैं ने सुना कि एक मुनादी ने निदा की : **ऐ नबिय्यल्लाह ! ऐ नूह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **! तशरीफ़ लाइये।** नागाह एक साह़िबे वजाहत ज़र्दी माइल

चेहरे वाले बुज़ुर्ग दो[2] जन्नती हुल्ले पहने हुए तशरीफ़ लाए और उन्हों ने भी वोही अल्फ़ाज़ इर्शाद फ़रमाए और एक कुरसी पर बैठ गए। फिर एक और बड़ा बादल आया और उस में से **ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام नुमूदार हुए, उन्हों ने भी वोही कलिमात फ़रमाए और एक कुरसी पर बैठ गए इसी त़रह़ **ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और **ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तशरीफ़ लाए और इसी त़रह़ के कलिमात इर्शाद फ़रमा कर कुरसियों पर जल्वा अफ़रोज़ हो गए। फिर एक बहुत ही बड़ा बादल आया उस में से **ह़ज़रते सय्यिदुना व मौलाना मुह़म्मदे म-दनी** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते सय्यि-दतुना बीबी फ़ातिमा और **ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन मुज्तबा** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا और मलाएका नुमूदार हुए। पहले मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **सरे अन्वर** के पास तशरीफ़ ले गए और **सरे मुबारक** को सीने से लगाया

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (ترغیب وترہیب)

और बहुत रोए। फिर ह़ज़रते सय्यि-दतुना बीबी फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को दिया, उन्हों ने भी सीने से लगाया और बहुत रोईं। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना आदम **सफ़िय्युल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पास आ कर यूं ता'ज़िय्यत की :

اَلسَّلَامُ عَلَی الْوَلَدِ الطَّیِّبِ، اَلسَّلَامُ عَلَی الْخَلْقِ الطَّیِّبِ، اَعْظَمَ اللّٰہُ اَجْرَکَ وَ اَحْسَنَ عَذَاءَکَ فِی ابْنِکَ الْحُسَیْنِ۔

सलाम हो पाकीज़ा फ़ित़रत व ख़स्लत वाले पाक फ़रज़न्द पर, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को बहुत ज़ियादा सवाब अ़त़ा फ़रमाए और आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के शहज़ादए गिरामी हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ (के इस इम्तिह़ान) में अह़सन या'नी बेहतरीन सब्र दे।

इसी त़रह़ **ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ नजिय्युल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام, **ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام, **ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (حاکم)

हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, ने भी ता'ज़िय्यत फ़रमाई। फिर सरकारे वाला तबार, **बि इज़्ने** परवर्द गार दो[2] जहां के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने चन्द कलिमात इर्शाद फ़रमाए। फिर एक फ़िरिश्ते ने सरकारे मदीना, सुल्ताने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के क़रीब आ कर अ़र्ज़ की, **ऐ अबुल क़ासिम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم (इस वाक़िअ़ए हाइला से) हमारे दिल पाश पाश हो गए हैं। मैं आस्माने दुन्या पर मुवक्कल[1] हूं। अल्लाह तआ़ला ने मुझे आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअ़त का हुक्म दिया है अगर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे हुक्म फ़रमाएं तो मैं इन लोगों पर आस्मान ढा दूं और इन को तबाहो बरबाद कर दूं। फिर एक और फ़िरिश्ते ने आ कर अ़र्ज़ की, **ऐ अबुल क़ासिम !** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मैं दरियाओं पर मुवक्कल हूं, अल्लाह तआ़ला ने मुझे आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअ़त का हुक्म दिया है अगर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

مدینہ

1 : वोह फ़िरिश्ता जो किसी काम पर मुक़र्रर हो, रखवाला, ज़िम्मादार, मुहाफ़िज़।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (کنز العمال)

फ़रमाएं तो मैं इन पर तूफ़ान बरपा कर के इन को तहिस नहिस कर दूं। सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ फ़िरिश्तो ! ऐसा करने से बाज़ रहो। **हज़रते सय्यिदुना हसन मुज्तबा** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने (सोए हुए चोकीदारों की तरफ़ इशारा करते हुए बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में) अ़र्ज़ की, **नानाजान !** येह जो सोए हुए हैं येही वोह लोग हैं जो मेरे भाई (हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) के **सरे अन्वर** को लाए हैं और येही निगरानी पर भी मुक़र्रर हैं। तो नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ मेरे रब (عَزَّوَجَلَّ) के फ़िरिश्तो ! मेरे बेटे के क़त्ल के बदले में इन को क़त्ल कर दो।" **तो ख़ुदा की क़सम ! मैं ने देखा कि चन्द ही लम्हों में मेरे सब साथी ज़ब्ह कर दिये गए।** फिर एक फ़िरिश्ता मुझे ज़ब्ह करने के लिये बढ़ा तो मैं ने पुकारा, **ऐ अबुल क़ासिम !** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे बचाइये और मुझ पर रह़्म फ़रमाइये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए। तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़िरिश्ते से

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा। (ابن عدی)

फ़रमाया : "इसे रहने दो।" फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे क़रीब आ कर फ़रमाया : तू उन सत्तर[70] आदमिय्यों में से है जो सर लाए थे ? मैं ने अ़र्ज़ की, जी हां ! पस आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना हाथ मुबारक मेरे कन्धे में डाल कर मुझे मुंह के बल गिरा दिया और फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **तुझ पर न रह़म करे और न तुझे बख़्शे, अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **तेरी हड्डियों को नारे दोज़ख़ में जलाए।**" तो येह वजह है कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से ना उम्मीद हूं। ह़ज़रते सय्यिदुना आ'मश رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने येह सुन कर फ़रमाया : ओ बद बख़्त ! मुझ से दूर हो कहीं तेरी वजह से मुझ पर भी अ़ज़ाब नाज़िल न हो जाए।

(शामे करबला, स. 267 ता 270)

बाग़े जन्नत छोड़ कर आए हैं मह़बूबे ख़ुदा
صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

ऐ ज़हे क़िस्मत तुम्हारी कुश्त-गाने[1] अहले बैत
رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم

1 : कुश्ता की जम्अ़, मक़्तूलीन, उ़श्शाक़।

हुब्बे जाहो माल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुब्बे जाहो माल बहुत ही बुरा वबाल है। मेरे प्यारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "दो भूके भेड़िये बकरियों में छोड़ दिये जाएं वोह इतना नुक़्सान नहीं पहुंचाते जितना कि माल व मर्तबे का लालच इन्सान के दीन को नुक़्सान पहुंचाता है।"

(سنن ترمذی ج٤،ص١٦٦ حدیث ٢٣٨٣)

यज़ीदे पलीद मालो जाह की **महब्बत** ही की वजह से सानिहए हाइलए कर्बो बला के वुक़ूअ़ का बाइस बना। इस ज़ालिमे बद अन्जाम को इमामे आ़ली मक़ाम सय्यिदुना **इमामे हुसैन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ وَاَرۡضَاهُ की ज़ाते गिरामी से अपने इक़्तिदार को ख़त़रा मह़सूस होता था। ह़ालां कि सय्यिदुना इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ को दुन्याए ना पाएदार के इक़्तिदार से क्या सरोकार ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ तो कल भी उम्मते

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दुरूद शरीफ़ पढ़ता है **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

मुस्लिमा के दिलों के ताजदार थे, आज भी हैं और रहती दुन्या तक रहेंगे।

न ही शिम्र का वोह सितम रहा, न यज़ीद की वोह जफ़ा रही
जो रहा तो नाम हुसैन* رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ *का, जिसे ज़िन्दा रखती है करबला

यज़ीद की इब्रत नाक मौत

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मुर-सलन मरवी है कि : حُبُّ الدُّنْيَا رَأْسُ كُلِّ خَطِيْئَةٍ या'नी दुन्या की **मह़ब्बत** हर बुराई की जड़ है।

(الجامعُ الصّغير للسّيو طی ص۲۲۳ حديث ۳۶۶۲ دارالكتب العلمية بيروت)

यज़ीदे पलीद का दिल चूंकि दुन्याए ना पाएदार की **मह़ब्बत** से सरशार था इस लिये वोह शोहरत व इक़्तिदार की हवस में गिरिफ़्तार हो गया। अपने अन्जाम से ग़ाफ़िल हो कर उस ने इमामे आ़ली मक़ाम और आप के रु-फ़क़ा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के ख़ूने नाह़क़ से अपने हाथों को रंग लिया। जिस इक़्तिदार

की ख़ातिर उस ने करबला में ज़ुल्मो सितम की आंधियां चलाईं वोह इक़्तिदार उस के लिये कुछ ज़ियादा ही ना पाएदार साबित हुवा। बद नसीब यज़ीद सिर्फ़ तीन[3] बरस छ[6] माह तख़्ते हुकूमत पर **शै-त़नत** (या'नी शरारत व ख़बासत) कर के रबीउ़न्नूर शरीफ़ 64 सि.हि. को मुल्के शाम के शहर ''ह़म्स''के अ़लाक़े **हुव्वारीन** में 39 साल की उ़म्र में मर गया।

(الکامل فی التاریخ ج۳، ص ٤٦٤ دارالکتب العلمیة بیروت)

यज़ीदे पलीद की मौत का एक सबब येह भी बताया जाता है कि वोह एक रूमिय्युन्नस्ल लड़की के इ़श्क़ में गिरिफ़्तार हो गया था, मगर वोह लड़की अन्दरूनी त़ौर पर उस से नफ़रत करती थी। एक दिन रंग रलियां मनाने के बहाने उस ने यज़ीद को दूर वीराने में तन्हा बुलाया। वहां की ठन्डी हवाओं ने यज़ीद को बद मस्त कर दिया। उस दोशीज़ा ने येह कहते हुए कि जो बे ग़ैरत व ना-बकार अपने नबी के नवासे का ग़द्दार हो वोह मेरा कब वफ़ादार हो सकता है, ख़न्जरे आबदार के पै दर पै वार कर के

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (مسلم)

चीर फाड़ कर उस को वहीं फेंक दिया। चन्द रोज़ तक उस की लाश चील कव्वों की दा'वत में रही। बिल आख़िर ढूंडते हुए उस के अहाली मवाली वहां पहुंचे और गढ़ा खोद कर उस की सड़ी हुई लाश को वहीं दाब आए। (अवराक़े ग़म, स. 550)

वोह तख़्त है किस क़ब्र में वोह ताज कहां है ?

ऐ ख़ाक बता ज़ोरे यज़ीद आज कहां है ?

इब्ने ज़ियाद का दर्दनाक अन्जाम

यज़ीदे पलीद की वोह चन्डाल चौकड़ी जिस ने मैदाने करबला में गुलशने रिसालत के म-दनी फूलों को ख़ाको ख़ून में तड़पाया था। उन का भी इब्रत नाक अन्जाम हुवा। यज़ीदे पलीद के बा'द सब से बड़ा मुजरिम कूफ़ा का गवर्नर उ़बैदुल्लाह इब्ने ज़ियाद था। इसी बद निहाद के हुक्म पर इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ और आप के अहले बैते किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को ज़ुल्मो सितम का निशाना बनाया गया था। नैरंगिये दुन्या का तमाशा देखिये कि **मुख़्तार स-क़फ़ी** की

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

तरकीब से इब्राहीम बिन मालिक अशतर की फ़ौज के हाथों दरियाए फ़ुरात के कनारे सिर्फ़ 6 बरस के बा'द या'नी 10 **मुहर्रमुल ह़राम** 67 सि.हि. को इब्ने ज़ियादे बद निहाद इन्तिहाई ज़िल्लत के साथ मारा गया ! लश्करियों ने उस का सर काट कर इब्राहीम को पेश कर दिया और इब्राहीम ने मुख़्तार के पास कूफ़ा भिजवा दिया।

(सवानेहे करबला, स. 123 मुलख़्ख़सन)

जब सरे मह़शर वोह पूछेंगे बुला के सामने
क्या जवाबे जुर्म दोगे तुम ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ *के सामने*

इब्ने ज़ियाद की नाक में सांप

दारुल इमारात कूफ़ा को आरास्ता किया गया और उसी जगह इब्ने ज़ियादे बद निहाद का **सरे नापाक** रखा गया जहां 6 बरस क़ब्ल इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का **सरे पाक** रखा गया था। इस बद नसीब पर रोने वाला कोई नहीं था बल्कि इस की मौत पर जश्न मनाया जा रहा था। (सवानेहे करबला, स. 123) सह़ीह़ ह़दीस में **इ़मारह बिन ड़मैर** से मरवी है

कि जब उ़बैदुल्लाह इब्ने ज़ियाद का सर मअ़ उस के साथियों के सरों के ला कर रखा गया। तो मैं उन के पास गया। अचानक गुल पड़ गया "आया आया।" मैं ने देखा कि एक सांप आ रहा है, सब सरों के बीच में होता हुवा इब्ने ज़ियाद के (नापाक) नथनों में दाख़िल हो गया और थोड़ी देर ठहर कर चला गया ह़त्ता कि ग़ाइब हो गया। फिर गुल पड़ा, "आया आया", दो[2] या तीन[3] बार ऐसा ही हुवा।

(سُنن تِرمذی ج٥، ص٤٣١ حدیث ٣٨٠٥ دارالفکر بیروت)

इब्ने ज़ियाद, इब्ने सा'द, शिम्र, क़ैस इब्ने अश्अ़स कन्दी, ख़ौली इब्ने यज़ीद, सिनान इब्ने अनस नख़ई, अ़ब्दुल्लाह इब्ने क़ैस, यज़ीद बिन मालिक और बाक़ी तमाम अश्क़िया[1] जो ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के क़त्ल में शरीक थे और सा-ई (या'नी कोशिश करने वाले) थे त़रह़ त़रह़ की उ़क़ूबतों (या'नी अज़िय्यतों) से क़त्ल किये गए और उन की

1 : शक़ी की जम्अ़, बद बख़्त लोग।

लाशें घोड़ों की टापों से पामाल कराई गईं। (सवानेह़े करबला, स. 158)

कब तलक तुम हुकूमत पे इतराओगे
कब तक आख़िर ग़रीबों को तड़पाओगे
ज़ालिमो ! बा'द मरने के पछताओगे
तुम जहन्नम के ह़क़दार हो जाओगे

सच है कि बुरे काम का अन्जाम बुरा है

मुख़्तार स-क़फ़ी ने चुन चुन कर यज़ीदियों का सफ़ाया किया। ज़ालिमों को क्या मा'लूम था कि **ख़ूने शु-हदा** रंग लाएगा और सल्त़नत के पुरज़े उड़ जाएंगे। हर एक शख़्स जो क़त्ले इमाम में शरीक हुवा है त़रह़ त़रह़ के अ़ज़ाबों से हलाक होगा। **वोही फ़ुरात का कनारा होगा, वोही आ़शूरा का दिन, वोही ज़ालिमों की क़ौम होगी और मुख़्तार के घोड़े उन्हें रौंदते होंगे।** इन की जमाअ़तों की कसरत इन के काम न आएगी। इन के हाथ पाउं काटे जाएंगे, घर लूटे जाएंगे, सूलियां दी जाएंगी, लाशें सड़ेंगी और दुन्या में हर शख़्स तुफ़ तुफ़ करेगा। इन की हलाकत पर ख़ुशी मनाई जाएगी। मा'रिकए जंग में अगर्चे इन की ता'दाद हज़ारों की होगी मगर वोह दिल छोड़ कर हीजड़ों

की त़रह़ भागेंगे और चूहों और कुत्तों की त़रह़ उन्हें जान बचानी मुश्किल होगी, जहां पाए जाएंगे मार दिये जाएंगे । दुन्या में क़ियामत में इन पर नफ़रत व मलामत की जाएगी ।

(सवानेह़े करबला, स. 125)

देखे हैं येह दिन अपने ही हाथों की बदौलत

सच है कि बुरे काम का अन्जाम बुरा है

मुख़्तार ने नुबुव्वत का दा'वा कर दिया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपने बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर को कोई नहीं जानता कि क्या है। मुख़्तार स-क़फ़ी जिस ने क़ातिलीने हुसैन को चुन चुन कर मारा और **मुह़िब्बीने** हुसैन के दिल जीते मगर उस पर शक़ावते अ-ज़ली[1] ग़ालिब हुई और उस ने **नुबुव्वत का दा'वा** कर दिया और कहने लगा, मेरे पास वह़्य आती है। (اَلصَّوَاعِقُ الْمُحَرِّقَة ص ١٩٨)

वस्वसा : इतना ज़बर दस्त मुह़िब्बे अहले बैत किस त़रह़ गुमराह हो कर मुरतद हो सकता है। क्या किसी झूटे नबी को भी ऐसे शानदार कारनामे करने की तौफ़ीक़ ह़ासिल हो सकती है ?

1 : अ-ज़ली बद बख़्ती ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा । (کنز العمال)

वस्वसे का इलाज : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बे नियाज़ है । उस की **ख़ुफ़्या तदबीर** से हम सभी को डरना चाहिये कि न जाने हमारा अपना क्या बनेगा ! देखिये ! **शैत़ान** भी बहुत ज़बर दस्त आ़लिमो फ़ाज़िल और आ़बिदो ज़ाहिद था । उस ने हज़ारों बरस इ़बादत की थी मगर शक़ावते अ–ज़ली ग़ालिब आई और वोह काफ़िर व मल्ऊन हो गया । बल्अ़म बिन बाऊ़रा भी बहुत बड़ा आ़लिम, आ़बिदो ज़ाहिद और मुस्तजाबुद्दा'वात था । उस को **इस्मे आ'ज़म** का इ़ल्म था अपनी जगह बैठ कर रूहा़निय्यत के सबब अ़र्शे आ'ज़म को देख लिया करता था मगर शक़ावते अ–ज़ली जब ग़ालिब आ गई तो बे ईमान हो कर मर गया और कुत्ते की शक्ल में दाख़िले जहन्नम होगा । **इब्ने सक़ा** जो कि ज़हीन तरीन आ़लिम व मुनाज़िर था मगर **वक़्त के ग़ौस** की बे अ–दबी का मुर–तकिब हो गया बिल आख़िर नसरानी शहज़ादी के इ़श्क़ में मुब्तला हो कर नसरानी मज़हब क़बूल करने के बा'द ज़िल्लत की मौत मर गया ।

अल्लाह तआ़ला ने अपने ह़बीब ह़ज़रते मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को वह़्य फ़रमाई कि मैं ने **यह़्या बिन ज़–करिय्या** (عَلَيْهِمَا السَّلَام) के क़त्ल के इ़वज़ सत्तर हज़ार 70000

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है। (ابویعلٰی)

अफ़राद मारे थे और तुम्हारे नवासे के इवज़ इन से दुगने (या'नी डबल) मारूंगा। (المستدرك للحاكم ج٣،ص ٤٨٥ حديث ٤٢٠٨)

तो तारीख़ शाहिद है कि **ह़ज़रते यह़्या बिन ज़-करिय्या** عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ख़ूने नाह़क़ का बदला लेने के लिये अल्लाह तआ़ला ने बख़्त नस्र जैसे ज़ालिम को मु-तअ़य्यन किया जो ख़ुदाई का दा'वा करता था। इसी त़रह़ ह़ज़रते इमामे आ़ली मक़ाम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के ख़ूने नाह़क़ का बदला लेने के लिये अल्लाह तआ़ला ने **मुख़्तार स-क़फ़ी** जैसे कज़्ज़ाब को मुक़र्रर फ़रमाया। (शामे करबला, स. 285)

अल्लाह तआ़ला की मस्लह़तें ख़ुद वोही जानता है। वोह अपनी मशिय्यत से ज़ालिमों के ज़रीए भी ज़ालिमों को हलाक करता है। चुनान्चे पारह 8 सू-रतुल अन्आ़म आयत नम्बर 129 में इर्शाद होता है :

وَكَذٰلِكَ نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًۢا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ (پ ٨ الانعام ١٢٩)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और यूं ही हम ज़ालिमों में एक को दूसरे पर मुसल्लत़ करते हैं। बदला उन के किये का।

हुज़ूरे पुरनूर, **शाफ़ेए यौमुन्नुशूर** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

फ़रमाते हैं : बेशक अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) इस दीने इस्लाम की मदद फ़ाजिर या'नी बदकार आदमी के ज़रीए से भी करा लेता है।

(صحیح بخاری ج۲، ص۳۲۸ حدیث۳۰۶۲ دارالکتب العلمیة بیروت)

अल्लाह की ख़ुफ़्या तदबीर से डरना चाहिये

हमें हर वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से डरते रहना चाहिये अपनी इ़ल्मिय्यत, शानो शौकत और जिस्मानी त़ाक़त पर घमन्ड से बचना और चर्ब ज़बानी और फूं फां से परहेज़ करना ज़रूरी है कि न मा'लूम इ़ल्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ में हमारा क्या मक़ाम हो। कहीं ऐसा न हो कि ईमान बरबाद हो जाए। ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनाने, इ़श्क़े मुस्त़फ़ा व सह़ाबा व अहले बैत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم وَرَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم पाने, दीनी मा'लूमात बढ़ाने, अपने आप को बुराइयों से बचाने, नेकियां अपनाने और ख़ूब ख़ूब सवाब कमाने की ख़ात़िर तमाम इस्लामी भाइयों को चाहिये कि हर माह कम अज़ कम तीन3 दिन के लिये **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र फ़रमाएं। इस्लामी भाई रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **72 म-दनी इन्आ़मात**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है । (طبرانی)

और इस्लामी बहनें **63 म-दनी इन्आ़मात** का कार्ड पुर कर के अपने तन्ज़ीमी ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाएं ।

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! शाहे ख़ैरुल अनाम, सह़ाबए किराम, शहीदे मज़्लूम इमामे आ़ली मक़ाम और जुम्ला शहीदान व असीराने करबला صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم وَ عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का वासित़ा ! हमारा ईमान सलामत रख, हमें क़ब्रो ह़श्र में अमान बख़्श और हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा, जल्वए मह़बूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में ईमानो आ़फ़िय्यत के साथ शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा । اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم

मुश्किलें ह़ल कर शहे मुश्किल कुशा के वासित़े
कर बलाएं रद शहीदे करबला के वासित़े رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ

मर्द के लिये सब से बड़ा वज़ीफ़ा : तक्बीरे ऊला के साथ पांच वक़्त मस्जिद की पहली सफ़ में बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ना

ग़मे मदीना व बक़ीअ़ व बिला ह़िसाब मग़्फ़िरत व जन्नतुल फ़िरदौस में सरकार के पड़ोस का त़लब गार अ़त्तारे गुनहगार

7 मुह़र्रमुल ह़राम
1428 हि.

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (ترغیب و ترہیب)

आ़शूरा के फ़ज़ाइल

"या शहीदे करबला हो दूर हर रन्जो बला" के पच्चीस हुरूफ़ की निस्बत से आ़शूरा की 25 ख़ुसूसिय्यात

(1) 10 मुहर्रमुल ह़राम आ़शूरा के रोज़ ह़ज़रते सय्यिदुना आदम **सफ़िय्युल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام की तौबा क़बूल की गई **(2)** इसी दिन इन्हें पैदा किया गया **(3)** इसी दिन इन्हें जन्नत में दाख़िल किया गया **(4)** इसी दिन अ़र्श **(5)** कुरसी **(6)** आस्मान **(7)** ज़मीन **(8)** सूरज **(9)** चांद **(10)** सितारे और **(11)** जन्नत पैदा किये गए **(12)** इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام पैदा हुए **(13)** इसी दिन इन्हें आग से नजात मिली **(14)** इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام और आप की उम्मत को नजात मिली और फ़िरऔ़न अपनी क़ौम समेत ग़रक़ हुवा **(15)** इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام पैदा किये गए **(16)** इसी दिन इन्हें आस्मानों की त़रफ़ उठाया गया **(17)** इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام की

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (حاکم)

कश्ती कोहे जूदी पर ठहरी **(18)** इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मुल्के अ़ज़ीम अ़ता किया गया **(19)** इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मछली के पेट से निकाले गए **(20)** इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना या'क़ूब عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बीनाई का ज़ो'फ़ दूर हुवा **(21)** इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام गहरे कुंवें से निकाले गए **(22)** इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तक्लीफ़ रफ़अ़ की गई **(23)** आस्मान से ज़मीन पर सब से पहली बारिश इसी दिन नाज़िल हुई और **(24)** इसी दिन का रोज़ा उम्मतों में मश्हूर था यहां तक कि येह भी कहा गया कि इस दिन का रोज़ा माहे **र-मज़ानुल मुबारक** से पहले फ़र्ज़ था फिर मन्सूख़ कर दिया गया (مُكَاشَفَةُ الْقُلُوب ص ٣١١) **(25) इमामुल** हुमाम, इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे अ़र्श मक़ाम, इमामे तिश्ना काम सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को बमअ़ शहज़ादगान व रु-फ़क़ा तीन[3] दिन भूका रखने के बा'द इसी आ़शूरा के रोज़ दश्ते करबला में इन्तिहाई सफ़्फ़ाकी के साथ शहीद किया गया ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (کنز العمال)

"करबला" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से मुहर्रमुल हराम और आ़शूरा के रोज़ों के 5 फ़ज़ाइल

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है हुज़ूरे अकरम, **नूरे मुजस्सम**, शाहे बनी आदम, **रसूले मुह़तशम, शाफ़ेए़ उमम** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "र-मज़ान के बा'द **मुह़र्रम** का रोज़ा अफ़्ज़ल है और फ़र्ज़ के बा'द अफ़्ज़ल नमाज़ **सलातुल्लैल** (या'नी रात के नवाफ़िल) है।" (صحیح مسلم ص ۸۹۱ حدیث ۱۱۶۳)

त़बीबों के त़बीब, अल्लाह के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : **मुह़र्रम** के हर दिन का रोज़ा एक महीने के रोज़ों के बराबर है। (طَبَرانی فی الصغیر ج ۲ ص ۸۷ حدیث ۱۵۸۰)

आ़शूरा का रोज़ा

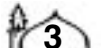

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं, "मैं ने सुल्त़ाने दो[2] जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा। (ابن عدی)

किसी दिन के **रोज़े** को और दिन पर फ़ज़ीलत दे कर जुस्त-जू फ़रमाते न देखा मगर येह कि **आ़शूरा** का दिन और येह कि **र-मज़ान** का महीना।"

(صحیح بخاری ج۱ص۶۵۷ حدیث ۲۰۰۶)

यहूदिय्यों की मुख़ा-लफ़त करो

4 नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया **: यौमे आ़शूरा** का **रोज़ा** रखो और इस में यहूदिय्यों की मुख़ा-लफ़त करो, इस से पहले या बा'द में भी एक दिन का रोज़ा रखो। (مسند امام احمد ج۱ ص۵۱۸ حدیث ۲۱۵۴)

आ़शूरा का रोज़ा जब भी रखें तो साथ ही नवीं[9] या ग्यारहवीं[11] **मुह़र्रमुल ह़राम** का रोज़ा भी रख लेना बेहतर है।

5 **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं **:** मुझे **अल्लाह** पर गुमान है कि **आ़शूरा का रोज़ा** एक साल क़ब्ल के गुनाह मिटा देता है।

(صحیح مسلم ص ۵۹۰ حدیث ۱۱۶۲)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (جامع صغیر)

सारा साल आंखें दुखें न बीमार हो

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं, **मुह़र्रम** की **नवीं**[9] और **दसवीं**[10] को रज़ा रखे तो बहुत सवाब पाएगा। बाल बच्चों के लिये **दसवीं**[10] **मुह़र्रम** को ख़ूब अच्छे अच्छे खाने पकाए तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ साल भर तक घर में ब-र-कत रहेगी। बेहतर है कि खिचड़ा पका कर ह़ज़रते शहीदे करबला सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की फ़ातिह़ा करे बहुत मुजर्रब (या'नी मुअस्सिर व आज़्मूदा) है। इसी तारीख़ या'नी **10 मुह़र्रमुल ह़राम** को **ग़ुस्ल** करे तो तमाम साल اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बीमारियों से अम्न में रहेगा क्यूं कि इस दिन **आबे ज़मज़म** तमाम पानियों में पहुंचता है (تفسیر روح البیان، ج٤،ص١٤٢ کوئٹه, इस्लामी ज़िन्दगी स. 93) सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, जो शख़्स यौमे आ़शूरा इस्मद सुरमा आंखों में लगाए तो उस की आंखें कभी भी न दुखेंगी।

(شعبُ الایمان ج٣ ص٣٦٧ حدیث ٣٧٩٧)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दुरूद शरीफ़ पढ़ता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

﴾786﴿ फ़ेहरिस ﴾92﴿

रिसाला पढ़ने की निय्यतें	1	सरे अन्वर से सलाम का जवाब	29
विलादते बा करामत	4	सरे अन्वर की अ़जीब ब-र-कत	30
रुख़्सार से अन्वार का इज़्हार	5	अज़िय्यत नाक कीड़ों का तआ़रुफ़	32
कुंवें का पानी उबल पड़ा	6	सरे मुबारक की चमक दमक	34
घोड़े ने बद लगाम को आग में डाल दिया	7	रिज़ाए मुस्तफ़ा का राज़	35
सियाह बिच्छू ने डंक मारा	9	मुख़्तलिफ़ मशाहद की वज़ाह़त	36
गुस्ताख़े हुसैन प्यासा मरा	10	मग़्फ़िरत से मायूसी की लरज़ा ख़ैज़ हिकायत	37
करामात इत्मामे हुज्जत की कड़ी थी	11	हुब्बे जाहो माल	46
नूर का सुतून और सफ़ेद परिन्दे	12	यज़ीद की इब्रत नाक मौत	47
ख़ौली बिन यज़ीद का दर्दनाक अन्जाम	14	इब्ने ज़ियाद का दर्दनाक अन्जाम	49
नेज़े पर सरे अक़्दस की तिलावत	17	इब्ने ज़ियाद की नाक में सांप	50
ख़ून से लिखा हुवा शे'र	20	सच है कि बुरे काम का अन्जाम बुरा है	52
सरे अन्वर की करामत से राहिब का क़बूले इस्लाम	22	मुख़्तार ने नुबुव्वत का दा'वा कर दिया	53
दिरहमो दीनार ठीकरियां बन गए	22	अल्लाह की ख़ुफ़्या तदबीर से डरना चाहिये	56
सरे अन्वर कहां दफ़्न हुवा ?	25	आ़शूरा के फ़ज़ाइल	59
तुरबते सरे अन्वर की ज़ियारत	27	सारा साल आंखें दुखें न बीमार हो	63

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने महल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।**

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है** اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "म-दनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "म-दनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाख़ें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपुर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपुर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दीन मस्जिद, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदराबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदराबाद फ़ोन : 040-24572786

हुबली : A.J. मुधोल कॉम्प्लेक्स, A.J. मुधोल रोड, ओल्ड हुबली ब्रीज के पास, हुबली, कर्नाटक फ़ोन : 08363244860